बालिकाओं की मानसिक योग्यता एवं शैक्षिक उपलब्धि : एक अध्ययन

(श्रावस्ती, उ0प्र0 के जनजाति एवं सामान्य जाति के विशेष सन्दर्भ में)

डॉ0 शिवम श्रीवास्तव*

प्रस्तुत लघुशोध परियोजना के अन्तर्गत सर्वेक्षण जनपद श्रावस्ती के थारू जनजाति (अनुसूचित जनजाति) की बालिकाओं को केन्द्र बिन्दु मानकर किया गया है। इसमें थारू जनजाति की बालिकाओं तथा सामान्य जाति के बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि एवं मानसिक योग्यता का अध्ययन किया गया है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद बालिकाओं की शिक्षा के क्षेत्र में काफी प्रगति हुई है। फिर भी यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि हमारे देश में स्त्रियों की दशा बहुत ठीक नहीं है। शहरों में बालिका शिक्षा के विकास में अवश्य प्रयास किए गए है पर वे भी अपयष्टि हैं। देश की सामाजिक एवं आर्थिक उन्नति के लिए आवश्यक है कि देश के सभी जातियों का समान विकास हो किन्तु स्वतंत्रता के 60 वर्षों उपरान्त आज भी बहुत से क्षेत्र उपेक्षित है। उपेक्षित क्षेत्रों में प्रमुखता से हमारी जनजातियाँ है। जनजातीय जीवन स्तर बढ़ाने के प्रयास तो हो रहे है किन्तु अभी बहुत अधिक प्रयास किए जाने की आवश्यकता है।

हमारे देश की अधिकांश जनजातीय जनसंख्या ऐसे स्थानों पर निवास करती है जहाँ पहुँच पाना बहुत आसान नहीं है। सामाजिक समानता हेतु इन जातियों की उन्नति अतिआवश्यक है। अनुसूचित जातियों में शिक्षा का प्रचार–प्रसार धीमी गति से हो रहा है। इन जातियों में शिक्षा के प्रचार–प्रसार से जागरूकता भी पैदा हो रही है। जनजाति के लोग रोजगार की तलाश में नगरों की ओर आ रहे हैं ये लोग धीरे 2 सभ्यसमाज की जीवन शैली अपनाने लगे हैं। नगरों कस्बों व समाज के अन्य समूहों में अपना निवास स्थान बनाने लगे है। जिससे उनके सामाजिक विचारों व मूल्यों में परिवर्तन आने लगा है। ऐसे अनुसूचित जनजाति के बच्चे, जिनका जन्म आम जनमानस के बीच कस्बों में हुआ है, सामान्य जाति के बच्चों का प्रभाव उन पर पड़ा है।

उत्तर प्रदेश में केवल दो जनजाति बुक्सा व थारू निवास करती है। जनपद श्रावस्ती में केवल थारू जनजाति ही निवास करती है। शिक्षा के प्रचार व प्रसार के साधनों के विकास के फलस्वरूप थारू समाज का सम्पर्क धीरे–धीरे गैर जनजातीय समूहों व समाज से होने लगा है। दूसरे समूह की संस्कृति के सम्पर्क से थारूओं के मूल विचारों में भी परिवर्तन दृष्टिगोचर हो रहे हैं। इनके समाज के अनेक लोग रोजगार की तलाश में बाहरी समाज के

* अध्यक्ष, शिक्षाशास्त्र विभाग, किसान पी0जी0 कालेज, बहराइच

सम्पर्क में आए और गैर जनजातीय समाज की जीवन शैली से प्रभावित होने लगे। शिक्षा के संसाधनों के विकास से विद्यालयों की संख्या में वृद्धि हुई है। थारू समाज आरक्षण व अन्य विकास योजनाओं से प्रभावित होकर शिक्षा के प्रति रूचि लेने लगा है। विद्यालयों में जनजातीय व गैर जनजातीय समाज के बच्चे एक साथ शिक्षा ग्रहण करने लगे है। इससे दोनों वर्गों के बच्चों की अभिवृत्ति प्रभावित हुई है।

बहराइच जनपद से पृथक हुआ श्रावस्ती जनपद साक्षरता की दृष्टि से अति पिछड़ा जनपद है। यहाँ महिला साक्षरता की दर तो और भी अधिक दयनीय है। थारू बालिकाओं की शैक्षिक स्थिति तो चिन्ताजनक है। जनपद की साक्षरता व भौगोलिक स्थिति को देखते हुए तो इस जनपद के विकास के लिए विशेष प्रयास की आवश्यकता है।

समस्या का उद्भवः–

सम्प्रति सरकार द्वारा जनजातियों के विकास के लिए कई कार्य किए जा रहे हैं, सुविधाए दी जा रही हैं व कई जनजातीय परिवार वर्षों से नगरों कस्बों व सभ्य समाज में स्थायी रूप से रह रहे हैं, जिनके बच्चे सामान्य जाति के बच्चों के विद्यालयों में पढ़ते है। जनजातीय लड़कियाँ सामान्य जाति के लड़कियों के साथ घुलमिलकर एक साथ विद्यालयों में रहती हैं। दोनों वर्गों के बच्चों को एक साथ एक ही वावावरण में शिक्षा प्रदान की जाती है। दोनों वर्गों के लिए पाठ्यक्रम व पाठ्य सहयोगी क्रियाएं एक सी हैं, तो क्या इन अनुसूचित जनजाति के बच्चों की सामाजिक अभिवृत्ति ने परिवर्तन आया है? क्या ये सामान्य वर्ग के बच्चों जैसा दृष्टिकोण रखते? क्या इनकी मूल विचारधारा में कोई परिवर्तन आया है? क्या इनकी शैक्षिक उपलब्धि में अन्तर आया है? क्या इनका शैक्षिक विकास हो रहा है? क्या इन बालकों की वैयक्तिक समस्याओं में मिलता है? क्या वैयक्तिक समास्याओं से शैक्षिक उपलब्धि प्रभावित होती है? दोनों वर्गों के बच्चों की मानसिक योग्यता में अन्तर तो नहीं है। एक सामान शैक्षिक वातावरण मिलने पर सामान्य जाति के बच्चों की तुलना में इन बच्चों की आज क्या स्थिति है? सभ्य समाज के बच्चें आज कहाँ तक जनजाति बच्चों पर अपना प्रभाव छोड़ पाये है? इन सभी तथ्यों के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त करने के मानसिकता से प्रस्तुत शोध समस्या का अर्विभाव हुआ।

केन्द्र व राज्य सरकार द्वारा जनजाति की बालिकाओं की शिक्षा के लिए छात्रावासों, छात्रवृत्तियाँ की व्यवस्था की गयी है। अनुसूचित जनजाति की बालिकाओं में साक्षरता का प्रतिशत बहुत कम है परिवार में किसकी स्थिति आज भी निम्न है। सरकार द्वारा इनके लिए निःशुल्क शिक्षा, निःशुल्क पुस्तकें उपलब्ध करवाने, निःशुल्क परिधान व दोपहर का भोजन उपलब्ध करवाने की व्यवस्था दी गयी है। किन्तु इन सभी प्रयासों के बावजूद भी

विद्यालयों में इनकी संख्या अन्य जाति की बालिकाओं की तुलना में बहुत ही कम है। उच्च कक्षाओं में इनकी संख्या और भी कम होती जाती है।

भारतीय संदर्भ अधिकांशतः विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धियों तथा विद्यालीय समस्याओं को केन्द्र बनाकर अध्ययनों की संयोजना की गयी है। जहाँ जनजातीय विद्यार्थियों की शिक्षा तथा उससे सम्बन्धों एवं चरों का प्रश्न है, ऐसे अध्ययनों की संख्या अधिक नहीं है। उल्लेखनीय है कि औपचारिक शिक्षा का बालकों के व्यवहार पर प्रभाव (पत्र 1981), शैक्षिक उलब्धि को प्रभावित करने वाले कारक (कपूर 1987, वर्मा 1999, यादव 2001, त्रिपाठी 2002, और रंजना 2002), शैक्षिक अवसरों की समानता (नायक 1991 और सुभाष चन्द्र 1991), मानसिक योग्यता और शैक्षिक उपलब्धि में सम्बन्ध (दास 1975, मेहरोत्रा 1986, भूसारी 1988, कल्पना 1992), शैक्षिक उपलब्धि का परिवार पर प्रभाव (शर्मा 1993, पाठक 2000, जायसवाल व अन्य 2003 एवं गुप्ता 2005), व्यक्तिगत समस्या को प्रभावित करने वाले तत्व (विल्थरे 1996 व मुकेश 2000), व्यक्तिगत समस्या एवं लिंगभेद में सम्बन्ध (सिंह 1983, सिंह 1999 तथा राय 2000), सामाजिक सम्मान (जोशी 2003), विद्यालयी अभिवृत्त (पाण्डेय 2003) एवं मानसिक योग्यता, वैयक्तिक समास्याएं शैक्षिक उपलब्धि, एवं सामाजिक अभिवृत्ति के तुलना (हासमी 2000) आदि अध्ययनों को गिनाया जा सकता है। वस्तुतः सामान्य जाति एवं जनजातीय बालिकाओं की मानसिक योग्यता का शैक्षिक उपलब्धि से सीधे तौर तुलना सम्बन्धी अध्ययन उपेक्षित ही रहे है। विशेषता पूर्व माध्यमिक स्तर पर जनजातीय बालिकाओं की तुलना सामान्य जाति की बालिकाओं से नहीं की गयी है।

अतः उपरोक्त तथ्यों के आलोक में शोद्यार्थी इस अध्ययन हेतु प्रेरित हुआ। सामान्य जाति एवं अनुसूचित जनजाति की बालिकाओं की मानसिक योग्यता की स्थिति क्या है, शैक्षिक उपलब्धि कैसी है। इनमें विद्यमान है अथवा नही। प्रस्तुत अध्ययन विषय वस्तु पर केन्द्रित हैं। अध्ययन की समस्या है, ''उ0प्र0 के श्रावस्ती जनपद के पूर्व माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत अनुसूचित जनजाति और सामान्य जाति की बालिकाओं की मानसिक योग्यता और शैक्षिक उपलब्धि का एक तुलनात्मक अध्ययन।''

मानसिक योग्यता–

मानसिक योग्यता का आधार मन एवं बुद्धि है। सामान्य रूप से मानसिक शब्द मन के विभिन्न कार्यो का वर्णन करता है। ज्ञानेन्द्रियों के माध्यम से प्राप्त होने वाले संवेदनो का सम्बन्ध मन से माना जाता है। व्यक्ति को अपनी इन्द्रियों के सम्बन्ध से विभिन्न प्रकार के अनुभव प्राप्त होते है और इन सभी का सम्बन्ध मानसिक योग्यता से है। किसी विषय के बारे में चिन्तन करना और फिर अपने विचार व्यक्त करना मानसिक योग्यता से सम्बन्धित है। जितने प्रकार की मानसिक क्रियाएं होती हैं, उनकी श्रेष्ठता

अथवा स्तर का अनुमान लगाने के लिए विभिन्न प्रकार के मानसिक योग्यता मापन अथवा परीक्षणों का प्रयोग किया जाता है।

शैक्षिक उपलब्धि–

विद्यार्थियों की उपलब्धि या उनके ज्ञान की परीक्षा प्राचीनकाल से किसी न किसी रूप में ली जाती रही है। प्राचीन काल में जब गुरू के पास छात्र ज्ञानार्जन के उद्देश्य से जाते थे तो पहले उन्हे आश्रम में रहना पड़ता था, जिससे की उनके ज्ञान, जिज्ञासा भाव या उपलब्धि की परीक्षा ली जा सके। इसी प्रकार तक्षशिला, विक्रमशिला और नालन्दा में जो विद्यार्थी प्रवेश पाना चाहते थे, उन्हे पहले द्वार–पंडित के प्रश्नों का उत्तर देना पड़ता था। इस प्रकार उनकी उपलब्धि की परीक्षा ली जाती थी।

थारू जनजाति

थारू उत्तर प्रदेश की प्रमुख जनजाति है। थारू को 1969 में जनजाति का दर्जा प्राप्त हुआ। यह जनजाति नैनीताल से लेकर टनकपुर तक फैली हुई है। यह लोग नैनीताल, उधमसिंहनगर, लखीमपुर–खीरी, गोण्डा, बहराइच, बलरामपुर, श्रावस्ती, गोरखपुर आदि जिलों में तथा बिहार के चम्पारन और दरभंगा जिले में एवं भारत के पूर्व में जलपाई गुडी (असम) से पश्चिम में कुमाऊँ ''गढ़वाल'' तक तथा नेपाल में–पूर्व में भेंची से पश्चिम में महाकाली के अंचल तक व्याप्त है। केवल नेपाल में ही इनकी चार लाख से अधिक की जनसंख्या है। नेपाल सीमान्तर्गत लुंबिनी, आंचलिक कपिलवस्तु, जिले की जनसंख्या में 40% थारू जनजाति है। उत्तर भारत में 1991 की जनगणना के अनुसार थारू जनजाति की जनसंख्या 118558 है। उत्तर प्रदेश में 2001 की जनगणना के अनुसार थारू जनजाति की जनसंख्या जनपद गोण्डा में 136, बलरामपुर में 19278, बहराइच में 8540, श्रावस्ती में 4756, गोरखपुर में 573, एवं लखीमपुर–खीरी में 37552 है। थारूओं के निवास क्षेत्र को 'थारूवाट' के नाम से जाना जाता है।

बालिका शिक्षा की स्थिति

प्रजातांत्रिक देशों में बालिका शिक्षा को सामाजिक तथा सांस्कृतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थान दिया जाता है। प्रजातंत्रात्मक शासन प्रणाली को सुदृढ़ बनाने के लिए पुरूषों के समान ही स्त्रियों को भी समाान अधिकार दिये जाते हैं और विकास के लिए समान सुविधाएं भी दी जाती हैं।

स्त्रियां समाज का आधार स्तम्भ होती हैं। भारत में तो नारियों को सदैव से ही आदरपूर्ण स्थान दिया जाता है। शिक्षित नारी ही परिवार एवं समाज की शोभा है मनु ने ठीक कहा है–''यत्र नार्मस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता'' अर्थात जहाँ नारी की पूजा होती है वहाँ देवता निवास करते है। स्त्री देश की संस्कृति, धर्म, साहित्य, ज्ञान व विज्ञान का स्तम्भ होती है। नारी विभिन्न रूपों में राष्ट्र तथा समाज की रक्षा करती हैं, माता के रूप में वह देश के भावी नागरिकों का निर्माण करती हैं।सबसे पहले नागरिकता की

शिक्षा माता की गोद से ही आरम्भ होती है। सुशिक्षित स्त्रियां कुछ क्षेत्रों में पुरूषों से भी अधिक निपुण सिद्ध हुई हैं। यदि स्त्रियों को पुरूषो की भाँति शिक्षा की सुविधा प्रदान की जाए तो वे भी कुशल समाज सुधारक, व्यावसायी, इंजीनियर, डॉक्टर, शिक्षक, अधिवक्ता, कारीगर तथा राजनीतिक नेता बनकर देश को समृद्धशाली बना सकती हैं। आधुनिक विचारक इन लाभों के अतिरिक्त स्त्री की आवश्यकता की ओर हमारा ध्यान निम्नलिखित कारणों के आधार पर आकर्षित करती हैं–

(1)– परिवार का परिवर्तित रूप संयुक्त से एकिक।
(2)– धार्मिक मान्यताओं के प्रति आस्था।
(3)– वर्गविहीन समाज के प्रति अनास्था।
(4)– अव्यवसायिक क्षेत्रों में मानवशक्ति की बढ़ती मांगे ।
(5)– वैवाहिक स्वतन्त्रता के लिए आत्मनिर्भरता के पहलू पर अधिक बल।
(6)– नारी भूमिका में परिवर्तन आधुनिक नहीं वरन् सहयोगिनी तथा सहगामिनी है।
(7)– बढ़ती हुई जनसंख्या पर नियंत्रण तथा जन्म दर में कमी लाने के लिए।

श्रावस्ती जनपद का परिदृश्य

श्रावस्ती जनपद का सृजन 22 मई 1997 को किया गया, पूर्व में यह बहराइच जनपद का एक भाग था। इसकी कमिश्नरी देवीपाटन मण्डल गोण्डा में स्थित है। श्रावस्ती मण्डल के पश्चिम उत्तर दिशा में 28.24 तथा 27.04 अक्षांश और 821 से 81.6 पूर्व देशान्तर में मध्य हिमालय की तराई वाले भाँवर क्षेत्र में स्थित है। इसके उत्तर में नेपाल देश, दक्षिण में बहराइच व गोण्डा, पश्चिम में बहराइच तथा पूर्व में बलरामपुर जनपद है। जनपद का मुख्यालय भिनगा में स्थापित है। (जिला विकास पुस्तिका 2006)

श्रावस्ती प्राचीन युग में कौशल जनपद का प्रमुख नगर था। बुद्धकाल में इस नगर का वैभव अपनी पूर्णता पर था। स्वयं गौतम बुद्ध ने यहाँ 26 वर्षों तक तपस्या की। राप्ती नदी के किराने बसा यह जनपद छोटी–छोटी नदियों से आच्छदित है। वर्ष के तीन माह यहाँ अधिकांश भाग में बाढ़ का प्रकोप रहता है। विकास से कोसों दूर शिक्षा के क्षेत्र में प्रदेश के सबसे पिछड़ें जनपदों में से एक श्रावस्ती जनपद में जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु यहाँ के निवासियों को कठिन परिश्रम करना पड़ता है।

जनपद श्रावस्ती की कुल साक्षरता 30.07 प्रतिशत है। पुरूष साक्षरता 41.97 प्रतिशत एवं महिला साक्षरता 15.85 प्रतिशत है। जनपद की साक्षरता प्रदेश में सबसे कम है। पुरूषों की साक्षरता में केवल बहराइच व बलरामपुर से आगे है। महिला साक्षरता भी प्रदेश में सबसे कम है।

श्रावस्ती जनपद का विकास खण्डवार साक्षरता प्रतिशत–2001

क्रमांक	विकास खण्ड	पुरूष	महिला	कुल
1	जमुनहा	38.11	12.04	26.16
2	थ्गलौला	48.37	17.99	34.57
3	ठकौना	46.48	17.95	33.39
4	ळरिहरपुररानी	35.62	12.78	25.42
5	सिरसिया	37.30	12.94	26.23
	योग जनपद	**41.97**	**15.85**	**30.07**

स्रोत–सांख्यिकीय पत्रिका, वर्ष 2006 कार्यालय अर्थ पर संख्याधिकारी–श्रावस्ती

स्पष्ट है कि सबसे अधिक पुरूष साक्षरता गिलौला विकासखण्ड में 48.37 प्रतिशत एवं सबसे कम हरिपुररानी विकासखण्ड में 35.62 हें जनपद में सबसे अधिक महिला साक्षरता गिलौला विकासखण्ड में 17.99 प्रतिशत एवं सबसे कम जमुनहा विकासखण्ड में 12.04 हें जनपद में सबसे कम साक्षर विकासखण्ड हरिहरपुरारानी (25.42 प्रतिशत) है तथा सबसे अधिक साक्षर विकासखण्ड गिलौला (34.57 प्रतिशत) हें

शोध अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत शोध अध्ययन के निम्नलिखित उद्देश्य है–

1. पूर्व माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत अनुसूचित जनजाति की बालिकाओं का मानसिक योग्यता स्तर ज्ञात करना।
2. पूर्व माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत सामान्य जाति की बालिकाओं का मानसिक योग्यता स्तर ज्ञात करना।
3. पूर्व माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत अनुसूचित जनजाति एवं सामान्य जाति की बालिकाओं की मानसिक योग्यता स्तर की तुलना करना।
4. पूर्व माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत अनुसूचित जनजाति की बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि ज्ञात करना।
5. पूर्व माध्यमिक स्तर अध्ययनरत सामान्य जाति की बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि ज्ञात करना।
6. पूर्व माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत अनूसूचित जनजाति और सामान्य जाति की बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि की तुलना करना।

शोध अध्ययन की परिकल्पनाएं

1. पूर्व माध्यमिक स्तर अध्ययनरत अनुसूचित जनजाति की बालिकाओं का मानसिक योग्यता स्तर सामान्य है।
2. पूर्व माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत सामान्य जाति की बालिकाओं का मानसिक योग्यता स्तर सामान्य है।
3. पूर्व माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत अनुसूचित जनजाति और सामान्य जाति की बालिकाओं की मानसिक योग्यता स्तर में कोई अन्तर विद्यमान नहीं है।

4. पूर्व माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत अनुसूचित जनजाति की बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि सामान्य है।
5. पूर्व माध्यमिक स्तर अध्ययनरत सामान्य जाति की बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि सामान्य है।
6. पूर्व माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत अनुसूचित जनजाति एवं सामान्य जाति की बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि में कोई अन्तर नहीं है।

अध्ययन विधि

प्रस्ततु शोध श्रावस्ती जनपद की पूर्व माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत अनुसूचित जनजाति तथा सामान्य जाति की बालिकाओं की मानसिक योग्यताओं एवं शैक्षिक उपलब्धियों की तुलना की गयी है। यह अध्ययन मानकीय (नारमेटिव) सर्वेक्षण के आधार पर पूरा किया गया है मानसिक योग्यताओं का सर्वेक्षण सम्बन्धित परीक्षण के आधार पर किया गया है जबकि बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि हेतु पूर्व माध्यमिक स्तर की अन्तिम परीक्षा में मिलने वाले प्रगति पत्र के अंकों का प्रतिशत प्रयोग में लाया गया है

ब्लाकवार पूर्व माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत अनुसूचित जनजाति की बालिकाओं की संख्या

क्रमांक	ब्लाक	विद्यायल की संख्या	अध्ययनरत बालिकाओं की संख्या
1	इकौना	42	–
2	गिलौला	46	–
3	हरिहरपुर रानी	48	8
4	जमुनहा	50	–
5	सिरसिया	51	124
योग–		**237**	**132**

उपर्युक्त सारणी से यह स्पष्ट है कि अनुसूचित जनजाति की बालिकाएं इकौना, गिलौला तथा जमुनहा ब्लाकों में अध्ययन नहीं करती हैं अपितु हरिहरपुररानी और सिरसिया मात्र दो ही ब्लाकों में यह बलिकायें अध्ययन करती है। हरिहरपुररानी ब्लाक में अनुसूचित जनजाति की मात्र 08 बालिकाएं ही अध्ययन करती मिली जबकि सिरसिया ब्लाक में इसकी संख्या 124 थी। इससे यह भी स्पष्ट है कि अनुसूचित जनजाति (थारू) सिरसिया ब्लाक में ही केन्द्रित हैं। इस प्रकार प्रस्तुत अध्ययन की जनसंख्या पूर्व माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत अनुसूचित जनजाति की मात्र 132 बालिकायें हैं।

न्यादर्श :–

प्रस्तुत शोध अध्ययन के न्यादर्श के लिए सर्वप्रथम उत्तर प्रदेश के श्रावस्ती जनपद के जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी के कार्यालय से पूर्व माध्यमिक विद्यालयों की सूची प्राप्त की गयी। श्रावस्ती जिले के अन्तर्गत आने वाले पूर्व माध्यमिक विद्यालयों में जहाँ अनुसूचित जनजाति की बालिकाएं अध्ययनरत थी, उन विद्यालयों से सम्पर्क स्थापित किया गया तथा उनकी कुल संख्या 132 पायी गई। यह उस सत्र (2008–09) में अध्ययनरत अनुसूचित जनजाति की छात्राओं की कुल जनसंख्या थी जबकि सामान्य जाति की बालिकाएं पूर्व माध्यमिक विद्यालयों में प्र्याप्त संख्या में अध्ययन करती पायी गयी। इन विद्यालयों से न्यादर्श का चयन करते समय अनुसंधानकर्ता ने लाटरी विधि का प्रयोग किया।

हरिहरपुररानी ब्लाक के पूर्व माध्यमिक विद्यालय, भिनगा में 02 तथा कस्तूरबा गाँधी आवासीय बालिका विद्यालय, भिनगा में 05 बालिकाएं अध्ययनरत थीं। इस प्रकार शोधार्थी को इस ब्लाक में मात्र 08 बालिकाएं उपलब्ध हुई जबकि सिरसिया ब्लाक के गुलशन–ए–गाजी उच्च माध्यमिक विद्यालय, मसहाकला में 17 पं0 बाबू राम शुक्ला उच्च माध्यमिक विद्यालय, साक्षीनगर में 08, बाबा परमहंस उच्च माध्यमिक विद्यालय, चिलहरिया मोड़ सिरसिया में 02, गायत्री लघुमाध्यमिक विद्यायल, तालबगौड़ा, 03 पूर्व माध्यमिक विद्यालय, मादगढ़ में 04 पूर्व माध्यमिक विद्यालय, रनियापुर में 44 तथा पूर्व माध्यमिक विद्यायल, भचकाही में 46 बालिकायें अध्ययनरत थी। इस ब्लाक में शोघार्थी को कुल 124 बालिकायें अध्ययनरत मिली। दोनों ब्लाकों में कुल मिलाकर 132 बालिकायें अध्ययन हेतु उपलब्ध हो सकी हैं।

प्रस्तुत अध्ययन में श्रावस्ती–जनपद के पूर्व माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत अनुसूचित जनजाति की बालिकाओं की तुलना सामान्य जाति की बालिकाओं की कुछ विशेषताओं से की गयी है। इस दृष्टि से अनुसंधानकर्ता ने सामान्य जाति की पूर्व माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत 132 बालिकाओं का भी चयन किया। अनुसंधानकर्ता में यह पाया कि हरिहरपुररानी ब्लाक के दो विद्यालयों (पूर्व मा0 विद्यालय, भिनगा एवं कस्तूरबा गाँधी आवासीय बालिका विद्यालय, भिनगा) तथा सिरसिया ब्लाक के मात्र दो विद्यालयों (पं0 बाबू राम शुक्ला उ0मा0वि0, साक्षीनगर एवं बाबापरमहंस उ0मा0वि0, चिलहरियामोड़) में सामान्य जाति की बालिकायें अध्ययनरत थीं। इन चारों विद्यालयों से अनुसंधानकर्ता ने सामान्य जाति की बालिकाओं का चयन किया। अनुसंधानकर्ता ने यह पाया कि सिरसिया ब्लाक के मसहाकला, तालाबगौड़ा, मदारगढ़, रनियापुर तथा भचकाही स्थित पूर्व माध्यमिक विद्यालयों में मात्र अनुसूचित जनजाति की बालिकाएं ही अध्ययन करती हैं। इनमें सामान्य जाति की एक भी बालिका अध्ययनरत नहीं है, इसलिए अनुसंधानकर्ता ने इन विद्यालयों के स्थान पर निकटवर्ती ऐसे पूर्व माध्यमिक

विद्यालयों का चयन किया, जिनमें सामान्य जाति की बालिकायें अध्ययनरत थी।

प्रयुक्त उपकरण

प्रस्तुत शोध अध्ययन में शैक्षिक उपलब्धि के रूप में जूनियर हाईस्कूल स्तर पर संचालित वार्षिक परीक्षा में अर्जित प्राप्तांकों के प्रतिशत को लिया गया है।

1. सामान्य बुद्धि परीक्षण–

प्रो0 एस0एम0 मोहिसिन द्वारा निर्मित इस परीक्षण का प्रकाशन सन् 1990 में हुआ था इस परीक्षण का उपयोग सामूहिक तथा व्यक्तिगत दोनों रूपों में किया जाता है।

आंकड़ों का विश्लेषण, परिणाम तथा व्याख्या

प्रस्तुत शोध अध्ययन का शीर्षक है ''उ0प्र0 के श्रावस्ती जनपद के पूर्व माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत अनुसूचित जनजाति तथा सामान्य जाति की बालिकाओं की मानसिक योग्यता, शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन''। अनुसूचित जनजाति तथा सामान्य जाति की बालिकाओं की मानसिक योग्यता, शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करने के लिए सामान्य बुद्धि की जाँच तथा मापनी शैक्षिक उपलब्धियों से सम्बन्धित आंकड़े श्रावस्ती जनपद के पूर्व माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत चयनित बालिकाओं से प्राप्त किये गये थे।

इन आँकड़ों से निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर जानने का प्रयत्न किया गया है–

1- पूर्व माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत अनुसूचित जनजाति की बालिकाओं का मानसिक स्तर क्या है?
2- पूर्व माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत सामान्य जाति की बालिकाओं का मानसिक स्तर क्या है?
3- पूर्व माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत अनुसूचित जनजाति एवं सामान्य जाति की बालिकाओं के मानसिक योग्यताओं में क्या अन्तर है?
4- पूर्व माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत अनुसूचित जनजाति की बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि क्या है?
5- पूर्व माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत सामान्य जाति की बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि क्या है?
6- पूर्व माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत अनुसूचित जनजाति एवं सामान्य जाति की बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि में क्या अन्तर

शोध अध्ययन के निष्कर्ष

वर्तमान अध्ययन के निष्कर्षों को निम्नलिखित रूप में प्रस्तुत किया गया है–

1. पूर्व माध्यमिक स्तर पर अध्ययरत अनुसूचित जनजाति की बालिकाओं का मानसिक योग्यता स्तर सामान्य है।
2. पूर्व माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत सामान्य जाति की बालिकाओं का मानसिक योग्यता स्तर सामान्य है।
3. पूर्व माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत अनुसूचित जनजाति एवं सामान्य जाति की बालिकाओं के मानसिक योग्यता स्तर में सार्थक अन्तर नहीं है।
4. पूर्व माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत अनुसूचित जनजाति की बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि सामान्य है।
5. पूर्व माध्यमिक स्तर अध्ययनरत सामान्य जाति की बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि सामान्य है।

पूर्व माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत अनुसूचित जनजाति एवं सामान्य जाति की बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर है अर्थात सामान्य जाति की बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि अनुसूचित जनजाति की बालिकाओं की तुलना में अधिक है।

सन्दर्भ

1. अग्रवाल, अर्चना (1992) – ''ए सोशल साइकोलॉजिकल एण्ड एजूकेशनल स्टडी ऑफ शड्येूल्ट कास्ट स्टूडेन्टस् स्टेडिंग इन हाईस्कूल ऑफ लखनऊ सिटी,'' पी–एच0डी0, लखनऊ विश्वविद्यालय लखनऊ।
2. अनुसूचित जनजातियों की जनसंख्या सम्बन्धी विवरण (2001) : ''भारत की जनगणना,'' श्रखला 10, खण्ड–iii, सारणी क 9, प्राथमिक जनगणना सार, जनगणना कार्य निर्देशालय, उ0प्र0।
3. आदिक जनजाति अनुसंधान संस्थान म0प्र0 भोपाल (1997) : ''बस्तर संभाग में विभागीय शालाओं के आवासीय एवं गैर आवासीय विद्यार्थियों की बोर्ड परीक्षा परिणामों का अध्ययन,'' प्रतिवेदन, अनुसंधान प्रकोष्ठ बस्तर, प्रकाशन क्रमांक 213।
4. आलमोर्ट एफ0एच0 (1960) उद्धरितः वी0वी0 अकोलकर, सोशल साइकॉलाजी, पब्लिस्ड बाई पी0एस0 जयसिंधे, एशिया पब्लिशिंग हाउस, बॉम्बे।
5. एकोस्टा, एस्थर, एस0 (2001) : ''ए रिलेशनशिप बिटवीन स्कूल क्लाइमेट एकेडमिक सेल्फ कन्सेप्ट एण्ड एकेडेमिक अचीवमेन्ट,'' डिजर्टेशन एब्स्ट्रैक्ट इण्टर नेशनल, वाल्यूम–62 (2001), पृष्ठ–1717।
6. कपूर रीता (1987) : ''स्टडी ऑफ फैक्टर रिस्पान्सिबल फॉर हाई एन्ड लो अचीवमेन्ट एट जूनियर हाईस्कूल लेवल,'' इन–एन0सी0ई0आर0टी0, फोर्थ सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजूकेशन, वाल्यूम–2, नई दिल्ली।
7. कश्यप, वसुधा (2005) : ''सामाजिक उत्तरदायित्व के प्रति महिला छात्रावासनियों की अभिवृत्ति का अध्ययन,'' लघु शोध प्रबन्ध, शिक्षा, लखनऊ वि0वि0।

****